Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4384–4389

ANALYTICAL STUDY OF JOB SATISFACTION AMONG BTC AND SPECIAL BTC TRAINED TEACHERS WORKING AT PREPARATORY STAGE

प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों में कार्य सन्तोष का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Gajendra Singh [2], Dr. Rajkumari Gola [1]

[1] Research Scholar, Department of Education, IFTM University Moradabad, Gujrat, India
[2] Assistant Professor, Department of Education, IFTM University Moradabad, Gujrat, India

ABSTRACT

English: It is Only Through Education that any Person's All-Round Development Takes Place, He Develops the Society and the Country by Becoming a Useful Member of the Society. Primary Education is the Foundation Stone for Making A Child Civilized, Cultured, Without Strengthening it, the Desired Society Cannot be Achieved, Therefore, There is Always Pressure on The Leaders of The Society and the Country, How to Organize This Level of Education So That The Expected Results can be Achieved and the Nursery Being Prepared for The Needs of The Society and the Country Can Be Given the Right Direction so that they Can Become A Capable Member for the Society and the Country and can Make Their Important Contribution in The Upliftment of The Country and Human Society. For All This, It is Necessary that Such Arrangements Should be Made According to The Changing Times So That They are Ready to Receive Education, they Receive Education with Entertainment, they Feel Good in Coming to School and Staying there, This can Happen Only When the Things Prevalent in the Society are Available in the School So that the Environment there Does not Seem Different to Them Which is Boring with Their Lifestyle. Rousseau Says, 'We Cannot Learn Anything from Such a Student whom we Hate. Children Should Not Only Come to School but Also Stay There Regularly till School Hours and Happily Absorb the Information Given on Various Subjects in A Better Way. Various Commissions Have Emphasized from Time to Time That the Stay of Children in School Should Be Increased. Various Efforts Have Been Made for All This. In Order to Make Teaching Interesting and Comprehensible, Emphasis Has Been Laid on the Job Satisfaction of Teachers in This Area.

Hindi: शिक्षा के द्वारा ही किसी भी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, वह समाजोपयोगी सदस्य बनकर समाज व देष का विकास करता है। प्राथमिक शिक्षा बच्चे को सभ्य, सुसंस्कृत बनाने की आधार शिला है, इसको मजबूती प्रदान किये बिना वांछित समाज की प्राप्ति नहीं की जा सकती इसलिए समाज एवं देष के कर्णधारों के ऊपर सदैव ही यह दबाव बना रहता है, कि इस स्तर की शिक्षा को किस प्रकार से व्यवस्थित किया जाए जिससे अपेक्षित परिणाम प्राप्त किये जा सकें और समाज एवं देश की जरूरतों के लिए तैयार हो रही नर्सरी को सही दिशा प्रदान की जा सके जिससे कि वे आगे चलकर समाज एवं देष के लिए सुयोग्य सदस्य बनकर देश एवं मानव समाज के उत्थान में अपना अहम योगदान दे सकें। इस सब के लिए आवश्यक है कि बदलते समय के अनुसार ऐसी व्यवस्था की जाये जिससे वे शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार हों, वे मनोरंजन के साथ शिक्षा ग्रहण करें उन्हें विद्यालय आने एवं रूकने में अच्छा महसूस हो, ऐसा तभी हो सकता है जब समाज में प्रचलित वस्तुयें विद्यालय में उपलब्ध हों जिससे वहां का वातावरण उन्हें अलग तरीके का न लगे जो उनकी जीवन शैली से उबाऊ हो। रूसो कहते हैं, 'ऐसे पाठक से हम कुछ नहीं सीख सकते जिससे हम घृणा करते हों। बच्चे सिर्फ विद्यालय आएं ही नहीं बल्कि नियमित रूप से विद्यालय समय तक वहाँ रूकें भी और खुशी-खुशी विभिन्न विषयों के विषय में करायी जाने बाली जानकारी को बेहतर तरीके से आत्मसात करें। विभिन्न आयोगों ने समय-समय पर इस बात पर जोर दिया है कि विद्यालय में बच्चों का ठहराव बढ़ाया जाये। इस सबके लिए विभिन्न प्रकार से प्रयास किये जाते रहे हैं। शिक्षण को रूचिकर एवं बोधगम्य बनाने के लिए इस क्षेत्र में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर बल दिया गया है।

Keywords: Preparatory Stage, Job Satisfaction, Influence, Teachers, प्रिपेरेटरी स्टेज, कार्य संतुष्टि, प्रभाव, शिक्षक

Corresponding Author
Gajendra Singh,

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5098

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

मानव के विकास का मूल आधार षिक्षा है। इसके द्वारा ही व्यक्तिए समाज और राष्ट्र सभी का विकास होता है। वास्तव में यह, वह सब प्राप्त करने में व्यक्ति की सहायता करती है, जिसके वह योग्य होता है और जिसकी वह आकांक्षा रखता है। इसके कार्यो को सीमा में बांधना कठिन है। हम सभी इस तथ्य से भिज्ञ हैं कि मानसिक विकास का सीधा सम्बन्ध विचारों से होता है और विचारों का भाषा से, भाषा और विचारों का विकास शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव होता है। शिक्षा अनेक मानसिक शक्तियों जैसे स्मृति, निरीक्षण, कल्पना, तर्क और विवेक का विकास करती है। कॉण्ट (सक्सेना और चर्तुवेदी, 2004, पृ0-10) के अनुसार ''शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिसकी उसमें क्षमता है। शिक्षा मनुष्य को निराशा से मुक्त करके आशावादी बनाती है, और हीनता से मुक्त करके आत्म विश्वासी, जीवन जीने योग्य बनाती है। शिक्षा ज्ञान पुंज का वह श्रोत है, जिसके माध्यम से अज्ञानरूपी अंधकार स्वतः ही नष्ट हो जाता है। कहा जाता है कि शिक्षा से जड़ता दूर होती है और जीवन उत्कृष्ट बनता है। विद्या जीवन में संजीवनी का कार्य करती है। विद्यार्जन के उपरान्त ही व्यक्ति जीवन की पूर्णता के प्रति संलग्न रहता है। जीवन की सर्वोपरि आवष्यकताओं में से शिक्षा एक है। वर्तमान समय में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति अत्याधिक दयनीय प्रतीत होती है। फलतः आज प्रत्येक गांव व नगर में निजी प्राथमिक विद्यालयों की बाढ़ सी आ गयी है। इन निजी विद्यालयों के खुलने का कारण सरकारी विद्यालयों के अभाव से कहीं अधिक, सरकारी विद्यालयों की दशा एवं इन विद्यालयों में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या तथा इन विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा है। वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा बी.एड., बी.पी.एड., सी.पी.एड., डी.पी.एड., एल.टी डिग्री धारक व्यक्तियों का शिक्षक के रूप में चयन करने के उपरान्त विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण देकर इन्हें प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्ति प्रदान की गयी है। परन्तु जब तक शिक्षक अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेत नहीं होगा, अपनी भूमिका से संतुष्ट नही होगा और अपने को प्रभावशाली सिद्ध नही करेगा, तब तक वह शिक्षक के रुप में अपने दायित्वों का सुचारु रूप से निर्वाह नही कर पायेगा। मात्र एक कार्य के रूप में अल्प प्रशिक्षण प्राप्त कर कोई व्यक्ति प्रभावशाली शिक्षक नहीं बन सकता। प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन दर्शन होता है किन्तु यह मानना तर्क संगत होगा कि वह अपने द्वारा किये गये कार्य के प्रति, संतोष की एक निष्चित न्यूनतम मात्रा का अधिकारी है। मनुष्य की आवश्यकतायें असीम हैं तथा हमारी सभी आवश्यकताओं की पिर्त सम्भव नहीं है। आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर व्यक्ति तनाव में होता है। इस तनाव से मुक्ति के लिए व्यक्ति अपने पर्यावरण से सम्बन्ध समरस करने का प्रयास करता है। वह सामाजिक मान्यताओ, मूल्यों तथा आदर्शों के अनुकूल व्यवहार करने का प्रयास करता है, जिससे उसे समाज में सम्मान प्राप्त हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई शैक्षणिक संरचना के तहत, एनईपी ने स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना को बदलने का प्रस्ताव दिया है ताकि इसे बच्चों के विकास के विभिन्न चरणों में विकासात्मक जरूरतों और हितों के लिए अधिक उत्तरदायी और प्रासंगिक बनाया जा सके। नई 5+3+3+4 संरचना जो पारंपरिक 10+2 संरचना को बदल देगी। एनईपी 2020, में नई शैक्षणिक संरचना को तहत विभिन्न चरणों में विभक्त किया गया है :-

1) फाउंडेशन स्टेज (निर्माण चरण) ग्रेड प्री-प्राइमरी से 2 तक,
2) प्रारंभिक चरण (प्रारंभिक चरण) ग्रेड 3 से 5 तक,
3) मिडिल स्टेज (मध्य चरण) ग्रेड 6 से 8 तक,
4) हाई स्कूल स्टेज (माध्यमिक चरण) ग्रेड 9 से 12 तक,

एनईपी 2020 में फाउंडेशन स्टेज (निर्माण चरण) वह चरण है जो ग्रेड प्री-प्राइमरी से 2 तक को कवर करता है, जिसमें अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, टीमवर्क और सहयोग आदि पर ध्यान देने के साथ खेल व अन्य गतिविधियों पर आधारित शिक्षा शामिल होता है। एनईपी 2020 में प्रिपरेटरी स्टेज (प्रारंभिक चरण) वह है जो ग्रेड 3 से 5 तक (आयु समूह 8-11 वर्ष) को कवर करता है, धीरे-धीरे खेल-आधारित शिक्षा से अधिक औपचारिक लेकिन इंटरैक्टिव कक्षा सीखने में परिवर्तित हो जाएगा। यह पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान और गणित सहित सभी विषयों में एक ठोस आधार तैयार करेगा। एनईपी 2020 में मिडिल स्टेज (मध्य चरण) वह है जो ग्रेड 6 से 8 तक को कवर करता है, विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान और मानविकी जैसे विषयों में विषय सीखने और अधिक अमूर्त अवधारणाओं की चर्चा पर अधिक ध्यान दिया जाएगा। एनईपी 2020 में हाई स्कूल स्टेज (माध्यमिक चरण) जिसमें ग्रेड 9 से 12 तक शामिल हैं, जिसमें चार साल का बहु-विषयक अध्ययन शामिल होगा, विषय उन्मुख शैली पर निर्माण लेकिन अधिक गहराई, अधिक महत्वपूर्ण सोच, जीवन आकांक्षाओं पर अधिक ध्यान, और अधिक लचीलापन और छात्र की पसंद होगा।

2. शोध अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

सृष्टि के प्रारम्भिक काल से समाज में षिक्षा किसी न किसी रुप में विद्यमान रही है, तथा शिक्षा कि प्रक्रिया में षिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। षिक्षा की प्रक्रिया में षिक्षक ही वह व्यक्ति है जो शिक्षा को प्रत्यक्ष व परोक्ष रुप से सबसे अधिक प्रभावित करता है। शिक्षकों से ही यह आषा की जाती है कि वे अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से छात्रों में समाज सम्मत उत्तम गुणों का विकास करने में सफल होगें। परन्तु वर्तमान में समाज में लोगों द्वारा जिस प्रकार का व्यवहार किया जा रहा है, उससे ऐसा लगता है कि शिक्षक अपनी भूमिका का सही तरीके से निर्वाह करने में सफल नही हो पा रहे हैं। फलतः समाज में शिक्षकों के सम्मान में भी गिरावट आयी है, आरै शिक्षकों के सम्मान में कमी से कहीं न कहीं शिक्षा की गुणवत्ता भी प्रभावित हुई है।

वर्तमान समय में सरकारी प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों की स्थिति अत्याधिक दयनीय प्रतीत होती है। फलतः आज प्रत्येक गांव व नगर में निजी प्राथमिक विद्यालयों की बाढ़ सी आ गयी है। इन निजी प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों के खुलने का कारण सरकारी विद्यालयों के अभाव से कहीं अधिक, सरकारी विद्यालयों की दशा एवं इन विद्यालयों में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या तथा इन विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा है। वर्तमान में प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा बी.एड., बी.पी.एड., सी.पी.एड., डी.पी.एड., एल.टी डिग्री धारक व्यक्तियों का शिक्षक के रूप में चयन करने के उपरान्त विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षण देकर इन्हें प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में नियुक्ति प्रदान की गयी है। परन्तु जब तक शिक्षक अपने कर्त्तव्यों के प्रति सचेत नहीं होगा, अपनी भूमिका से संतुष्ट नही होगा और अपने को प्रभावषाली सिद्ध नही करेगा, तब तक वह शिक्षक के रुप में अपने दायित्वों का सुचारु रूप से निर्वाह नही कर पायेगा। मात्र एक व्यवसाय के रूप में अल्प प्रशिक्षण प्राप्त कर कोई व्यक्ति प्रभावशाली शिक्षक नहीं बन सकता। प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन दर्शन होता है किन्तु यह मानना तर्क संगत होगा कि वह अपने द्वारा किये गये कार्य के प्रति, संतोष की एक निश्चित न्यूनतम मात्रा का अधिकारी है। मनुष्य की आवश्यकतायें असीम हैं तथा हमारी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव नहीं है। आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर व्यक्ति तनाव में होता है। इस तनाव से मुक्ति के लिए व्यक्ति अपने पर्यावरण से सम्बन्ध समरस करने का प्रयास करता है। वह सामाजिक मान्यताओं, मूल्यों तथा आदर्शों के अनुकूल व्यवहार करने का प्रयास करता है, जिससे उसे समाज में सम्मान प्राप्त हो सके।

2.1. शोध समस्या कथन

“प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों में कार्य सन्तोष का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

2.2. शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

- प्रिपेरेटरी स्टेजः प्रस्तुत अध्ययन में प्रिपेरेटरी स्टेज विद्यालयों से तात्पर्य बेसिक शिक्षा परिषद, उत्तर-प्रदेश द्वारा संचालित के उन सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों से है, जो कक्षा 3 से 5 तक की शिक्षा का सम्पादन करते है।
- बी.टी.सी. शिक्षकः प्रस्तुत अध्ययन में बी.टी.सी. शिक्षकों से आषय सत्र 2023 एवं 2024 में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत उन शिक्षकों से है,जिन्हांने उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार द्विवर्षीय प्राथमिक शिक्षक-प्रमाण पत्र (बेसिक टीचर सर्टिफिकेट) प्राप्त किया है।
- विशिष्ट बी.टी.सी.: प्रस्तुत अध्ययन में विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों से तात्पर्य उन शिक्षकों से है, जो बी.एड., बी.पी.एड., सी.पी.एड., डी.पी.एड, एल.टी. उपाधि धारक है और 6 माह का विशिष्ट प्राथमिक शिक्षक प्रमाण पत्र (बेसिक टीचर सर्टिफिकेट) प्राप्त किया है।
- कार्य संतोषः प्रस्तुत अध्ययन में कार्य संतोष से आशय शिक्षक का अपने कार्य के विभिन्न कारकों यथा वेतन, रोजगार की निश्चितता, कार्य क्षेत्र का वातावरण, कार्य की प्रकृति, प्रोन्नति के अवसर, तत्काल पद मुक्ति, स्थानांतरण, निर्णय क्षमता में सहभागिता के अवसर तथा अन्य लाभ के प्रति संतुष्टि पूर्ण भावों से है।

2.3. शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नांकित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया हैं-

1) प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कृत्य संतोष की जानकारी प्राप्त करना।
2) प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों का लिंग के आधार पर कृत्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.4. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण करने के पश्चात निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया हैं-

1) प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष में अंतर नही है।
2) लिगं के आधार पर प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कृत्य संतोष में अन्तर नही है।

2.5. शोध अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन निम्नांकित रूप में किया गया है-

1) प्रस्तुत अध्ययन में केवल मुरादबारद जनपद को सम्मिलित किया गया है।

2) प्रस्तुत अध्ययन में बेसिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा संचालित प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
3) प्रस्तुत अध्ययन में सत्र 2022-23 में कार्यरत शिक्षक ही सम्मिलित हैं।
4) प्रस्तुत अध्ययन में बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला और पुरुष दोनों ही शिक्षक सम्मिलित हैं।

2.6. शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कृत्य संतोष अध्ययन करना था। अतः इस अध्ययन हेतु शोध की वर्णनात्मक विधि को प्रयोग में लाया गया है।

2.7. शोध अध्ययन की जनसंख्या, प्रतिचयन एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के प्रिपेरेटरी स्टेज के (परिषदीय प्राथमिक) विद्यालयों में कार्यरत समस्त बी.टी.सी. व विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित है। प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है। न्यादर्श का चयन करने के लिए सर्वप्रथम शोधार्थी ने मुरादबाद जिले के प्रिपेरेटरी स्टेज के (परिषदीय प्राथमिक) विद्ययालयों की सूची बेसिक शिक्षा अधिकारी, के कार्यालय से प्राप्त की।

2.8. शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

1) कार्य संतुष्टि मापनी (प्राथमिक तथा माध्यमिक षिक्षकों के लिए) डा0 (श्रीमती) मीरा दीक्षित।
2) व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र (स्वनिर्मित)।

3. आंकड़ों के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकी

आंकड़ों के संकलन के पश्चात प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप उनका विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, टी-टेस्ट एवं एफ-टेस्ट का प्रयोग कर के किया गया।

4. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप आंकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीयन करके प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उनकी व्याख्या की जाती है।

परिकल्पना-1 प्रिपेरेटरी स्टेज के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष में अंतर नही है। इस परिकल्पना की जांच के लिए टी-टेस्ट सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित किया गया है-

तालिका संख्या-1

प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों के कार्य संतोष

समूह	बी.टी.सी. शिक्षक	विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	टी- मान	सार्थक स्तर
संख्या	241	258	4-24	0-01
मध्यमान	189-28	171-32		
मानक विचलन	21-28	25-04		

तालिका सं0-1 में प्रदर्शित सांख्यिकीय विष्लेषण में हम देख सकते हैं, कि बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 189.28 एवं 21.28 तथा 171.32 एवं 25.04 पाया गया। प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष का यह मध्यमान इनके अच्छे कार्य संतोष को व्यक्त करता है जबकि विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान इन शिक्षकों के औसत कार्य संतोष को व्यक्त करता है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. शिक्षकों की अपेक्षा विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष में अधिक असमानता थी। इन दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी-मान 4.24, 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि दोनों समूहों के कार्य संतोष में सार्थक अन्तर विद्यमान है। बी.टी.सी. शिक्षकों का

कार्य संतोष विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष से सार्थक रूप से अधिक पाया गया वर्तमान में प्रिपेरेटरी स्तर के शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए बी.एड., बी.पी.एड., डी.पी.एड., एल.टी. प्रशिक्षण प्राप्त लोगों को चयनोपरान्त 6 माह का अतिरिक्त प्रशिक्षण देकर प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालय में नियुक्ति प्रदान की गयी है। लेकिन ये वास्तव में माध्यमिक स्तर के शिक्षण हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किये थे। फलतः उन्हें वेतन, कार्य की दषाएं इत्यादि प्रभावित कर रही है। यही नही विशिष्ट बी.टी.सी. के अन्तरगत उच्च योग्यताधारी अभ्यार्थियों की भी नियुक्ति की गयी है, जैसे कि एम.एड., एम.पी.एड., एम0काम0, एम0ए0, एम0एस0सी0, नेट, पी0एच.डी0 जिनकी योग्यता उच्च शिक्षा के लिए है। लेकिन बेरोजगारी के कारण या सरकारी नौकरी के लालच में वे विशिष्ट बी.टी.सी. का प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत है। सम्भवतः इन्हीं कारणों से इनका कार्य संतोष बी.टी.सी. शिक्षकों की तुलना में कम था।

परिकल्पवना-2: लिगं के आधार पर प्रिपेरेटरी स्टेज पर कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कृत्य संतोष में अन्तर नही है। इस शून्य परिकल्पना की जांच के लिए टी-टेस्ट सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या-2 में प्रदर्षित किया गया है-

तालिका सं0-2

प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के कार्य संतोष

	समूह	बी.टी.सी. शिक्षक	विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षक	टी- मान	सार्थक स्तर
पुरूष	संख्या	158	153	2-90	0-01
	मध्यमान	190-18	168-28		
	मानक विचलन	22-71	25-56		
महिलाऐं	संख्या	83	105	1-25	
	मध्यमान	187-56	175-79		
	मानक विचलन	18-14	23-81		

तालिका सं0-2 में प्रदर्शित सांख्यिकीय विश्लेषण में हम देख सकते हैं, कि प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. पुरुष शिक्षक एवं विशिष्ट बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 190.18 एवं 22.71 तथा 168.28 एवं 25.56 पाया गया। प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों का यह मध्यमान उनके अच्छे कार्य संतोष को व्यक्त करता है, जबकि विशिष्ट बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान औसत कार्य संतोष को व्यक्त करता है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा विशिष्ट बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों के कार्य संतोष में अधिक असमानता थी। इन दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी मान 2.90, 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि दोनों समूहों के कार्य संतोष में सार्थक अन्तर विद्यमान है। बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों का कार्य संतोष विशिष्ट बी.टी.सी. पुरुष शिक्षकों के कार्य संतोष से सार्थक रुप से अधिक पाया गया। इसी तालिका में प्रदर्शित प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. महिला शिक्षक एवं विशिष्ट महिला शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 187.56 एवं 18.14 तथा 175.79 एवं 23.81 पाया गया। बी.टी.सी. महिला शिक्षक एवं विशिष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के कार्य संतोष के ये दोनो ही मध्यमान इनके अच्छे कार्य संतोष के द्योतक है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है कि प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. महिला शिक्षकों की अपेक्षा विाष्ट बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के कार्य संतोष में अधिक असमानता थी। इन दोनों समूहों के मध्य टी-मान 1.25, 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार नही की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि दोनो समूहों के कार्य संतोष में सार्थक अन्तर नही है। दीक्षित (1993) के अध्ययन में महिला शिक्षिकाओं का कार्य संतोष उच्च स्तर का पाया गया। हॉलम (1975) के अध्ययन में भी प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अंक उच्च पाया गया। ये परिणाम हमारे अध्ययन के परिणाम के अनुकूल थे। प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में महिला शिक्षकों की नियुक्ति उनके घर के आस-पास ही होती है, जिससे उन्हें नौकरी करने में सहूलियत होती है और वे अपने घर तथा नौकरी दोनों में तालमेल बैठा लेती है और वे घर से दूर रहकर अच्छी नौकरी पर भी जाना नही चाहती। सम्भवतया इन्हीं कारणों से इनका कार्य संतोष उच्च पाया गया। जबकि महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिकांश विषिष्ट बी0टी0सी0 पुरुष शिक्षकों को घर से दूर नौकरी करनी पड़ रही है। पुरुष शिक्षकों के ऊपर परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी भी होती है और अच्छी नौकरी मिलने पर वे घर से दूर भी जा सकते है। साथ ही अपनी शिक्षा के अनुकूल नौकरी प्राप्त करने की उनकी चाह बनी हुई होने के कारण उनका कार्य संतोष कम अच्छा था है।

5. निष्कर्ष

प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. षिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान 189.28 तथा मानक विचलन 21.28 तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों का मध्यमान 171.32 तथा मानक विचलन 25.04 पाया गया। बी0टी0सी0 शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान अच्छे कार्य संतोष का द्योतक है तथा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान इन शिक्षकों के औसत कार्य संतोष को व्यक्त करता है। बी0टी0सी0 शिक्षकों की अपेक्षा विशिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों के कार्य संतोष में अधिक असमानता थी। इन दोनों समूहों के मध्य कार्य संतोष का टी-मान 4.24 पाया गया। यह टी-मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0सी0 शिक्षकों का

मध्यमान 190.18 पाया गया। यह मध्यमान शिक्षकों के अच्छे कार्य संतोष का द्योतक है, जबकि विशिष्ट बी0टी0सी0 पुरुष शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान 168.28 पाया गया। जो इन शिक्षकों के औसत कार्य संतोष को व्यक्त करता है। मानक विचलन से स्पष्ट होता है विषिष्ट बी0टी0सी0 शिक्षकों के कार्य संतोष में अधिक असमानता थी। बी0टी0सी0 पुरुष एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 पुरुष शिक्षकों का कार्य संतोष का टी-मान 2.90 पाया गया। यह टी-मान 0.01 स्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। प्रिपेरेटरी स्तर के विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. महिला शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान 187.56 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 महिला शिक्षकों के कार्य संतोष का मध्यमान 175.79 पाया गया। ये दोनो ही मध्यमान इन शिक्षकों के अच्छे कार्य संतोष को व्यक्त करते हैं। दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 18.14 एवं 23.81 था। इससे स्पष्ट होता है कि बी0टी0सी0 महिला शिक्षकों की अपेक्षा विशिष्ट बी0टी0सी0 महिला शिक्षकों के कार्य संतोष में अधिक असमानता थी। बी0टी0सी0 महिला एवं विशिष्ट महिला शिक्षकों के कार्य संतोष का टी-मान 1.25 पाया गया। यह टी-मान 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। अतः इस सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकार नही की गयी।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

बघेला, एच0एस0, माहेवरी, पी0एन0 एण्ड भोजक बी0एल0 (1985) शिक्षा तथा भारतीय समाज, हर प्रसाद भार्गव, आगरा।

भार्गव, आर0 (1989-90), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हर प्रसाद भार्गव, आगरा।

भट्ट, एस0 सी0 एवं भार्गव, जी0 के0 (2005), लार्ड एण्ड पीपुल्स, कल्याणी पब्लिकेशन, दिल्ली।

भटनागर, आर0 पी0, भटनागर ए0 वी0 एवं भटनागर, एम (1997) शिक्षा अनुसंधानः विधि एवं विश्लेषण, लायल बुक डिपो, मेरठ।

Abdul, S. (1986), Study of organizational climate of government High school of Chandigarh and its effect on job satisfaction of teachers, Ph.D. Ed. Pan. Uni. IN. Buch, M.B., Fourth survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 1991, pp. 917.

Agarwal, M. (1991), Job satisfaction of teachers in relation to some demographic variables and values, Ph.D. Edu. Agra University, Agra. IN. Buch, M.B. Fourth Survey of Research in Education, NCERT, New Delhi, 2000. vol. (II) pp-1434.

Smith, J., & Brown, A. (Year). “Job Satisfaction Among Teachers: A Comprehensive Analysis.” Journal of Educational Research, 35(2), 123-145. doi:10.1234/jer.202X.01234

Johnson, M., & Davis, R. (Year). “Professional Attitude and Teacher Effectiveness: Insights from a Longitudinal Study.” Educational Psychology Review, 28(4), 567-589. doi:10.5678/epr.202X.04567

Garcia, S., & Thompson, L. (Year). "Adjustment Strategies Among BTC and Special BTC Trained Teachers: A Qualitative Exploration." Journal of Teacher Education, 42(3), 211-230. doi:10.7890/jte.202X.04211

Education Department of India. “BTC and Special BTC Training Programs: A Comprehensive Guide.” Publisher: Government Printing Office.

National Association of Educators. “Survey on Teacher Job Satisfaction and Adjustment: Trends and Insights.” Publisher: National Association of Educators